International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-03-2025, Accepted: 29-04-2025, Published: 15-05-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 34-37

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी संघर्ष

पॉली भौमिक
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा, भारत

सारांश
मैत्रेयी पुष्पा बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की प्रमुख कथाकारा है। उनकी कहानियाँ स्त्री के खंडित जीवन, कुंठा के परिणामस्वरूप बिखरते रिश्ते, समाज और परिवार में स्त्री की भूमिका इत्यादि को प्रस्तुत करती है। मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों की नारियाँ परंपरागत बंधनों, कुंठा, अंधविश्वास को त्यागकर नवीन चेतना के साथ सामने आती है। मैत्रेयी पुष्पा ने जीवन की जिस पीड़ा को भोगा है, जिया है उसी का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में किया है। समय में परिवर्तन के साथ– साथ नारियों में भी सकारात्मक परिवर्तन हो रहे है जिसका यथार्थ वर्णन कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियाँ जीवन की नई भावबोध को अभिव्यक्त करती है। उनकी कहानियों में न केवल उन नारी पात्रों का चित्रण मिलता है जो अपने अधिकारों के लिए लड़ रही है बल्कि उन नारी पात्रों को भी उठाया गया है जो हाशिये में कर दी गई है और उन्हे मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया गया है। उनकी कहानियों में उन नारी चरित्र के वर्णन मिलते है जिन्हें केवल अधिकारों से ही वंचित नहीं रखा गया बल्कि चेतना होने के अवसरों से भी दूर रखा गया है। मैत्रेयी पुष्पा अपनी रचनाओं के द्वारा कथागत तथा शिल्पगत रूढ़ियों को तोड़ती हुई एक विश्लेषक के रूप में सामने आई है।

मूल शब्दः कुंठा, अंधविश्वास, नवीन चेतना, परंपरागत बंधन, पीड़ा, नई भावबोध, सकारात्मक परिवर्तन

मैत्रेयी पुष्पा आधुनिक युग की लेखिका है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष में उपजे स्त्री– विमर्श को गाँव तक ले जाने वाली प्रथम कथाकारा वही है जो पीड़ितों एवं दुःखियों की पीड़ा को अपनी लेखनी द्वारा अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से पुरुष लेखकों द्वारा रची गई परंपरागत नारी की छवि का खंडन किया है, परंपरागत नारी चित्रण को तोड़ा है। उनकी कहानियों में नारी की कसमसाहट उभरकर आई है। विवाह एक ऐसी संस्था है जो नारी को पारिवारिक बंधनों में बांधकर उसकी स्वतंत्रता को छीन लेती है, जिसके फलस्वरूप नारी आर्थिक रूप से स्वावलंबी होते हुए भी पुरुष के बंधनों में जकड़ी हुई है। नारी को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक तौर पर भी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। विवाहित नारी को भी वही समान अधिकार और सुविधाएं मिले जो पुरुषों को मिलती है। उनकी कहानियों की नारियाँ इन्हीं सामाजिक रूढ़ियों और बंधनों से टकराती है। उनकी कहानियाँ उस समाज पर सवाल उठाती है जो बेटा और बेटी में भेद करता है, समान अपराध करने वाले बेटी को सजा और बेटे को सम्मान दिया जाता है। उनकी कई कहानियों के पात्र ऐसे है जो इन्हीं समाज की रूढ़ियों और अत्याचारों में दबोची हुई है, पीस रही है और जब सहना मुश्किल को जाता है तो उसका सामना करती है और समाज को अपनी असली शक्ति से परिचित करवाती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में ऐसी नारी के भी चित्रण मिलते है जो देह– स्वतंत्रता के पक्ष में है, और ऐसा करने में उन्हें कोई आत्मग्लानि नहीं होती क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि अगर पुरुष एकाधिक स्त्रियों से संबंध रख सकते है तो एक नारी क्यों नहीं रख सकती। इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है जो समाज की विभिन्न समस्याओं से जूझती हुई नजर आती है। उनकी अधिकांश कहानियों में मध्य एवं निम्न वर्ग के जीवन का चित्रण मिलता है। समाज की विभिन्न कुरीतियाँ, कुंठा, विद्रोह एवं आंदोलन की भावना का चित्रण कहानियों में स्पष्ट नजर आते है। उनकी प्रमुख तीन कहानी संग्रह है जिसमें कुल मिलकर बत्तीस कहानियाँ है जिसके नाम और प्रकाशन वर्ष निमन्वत हैः–

1. चिन्हार (१९९१)
2. ललमानियाँ (१९९६)
3. गोमा हँसती है (१९९८)

इन कहानियों के द्वारा मैत्रेयी पुष्पा ने नारी जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन किया है। उनकी रचनाएं समाज को टटोलते विभिन्न प्रश्न, स्थितियों, परिवेश और समस्याओं का सामना करती है और नारी के संघर्ष का प्रमाण प्रस्तुत करती है। इनकी कहानियों के पात्र जीवन की विभिन्न समस्याओं और जटिलताओं को प्रस्तुत करती है। पारंपरिक स्त्री के चित्रण में जहाँ नारी की शांति और धैर्य के पीछे छिपी अशान्ति ने हमेशा से प्रसन्न और सुखी रहती नारी की छवि को गलत साबित किया है। उनकी कहानियों में नारी के जीवन की त्रासदी, उसकी विडंबना स्पष्ट झलकती है जहाँ नारी अपने ही सगे संबंधों में अपनापन खोजती है वही पुरुष व्यवस्थित समाज में अपने अस्मिता के लिए संघर्ष करती हुई भी नजर आती है। उनका संघर्ष समाज में उस पुरुष व्यवस्था के विरुद्ध किया जाने वाला संघर्ष है जो उसे विपरीत परिस्थिति में डालता है, उसे विचलित करता है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी संघर्ष विभिन्न प्रकार से नजर आती है जैसे वृद्ध अवस्था के संघर्ष, जातिगत भेदभाव के कारण संघर्ष, विधवा जीवन का संघर्ष, अनमेल विवाह का संघर्ष इत्यादि।

वृद्ध अवस्था के संघर्ष

आज के समय में व्यक्ति आत्मकेंद्रित बन गया है। संयुक्त परिवार के टूटने के कारण आत्मीय संबंधों में दूरियाँ, अलगाव, हिंसा, ईर्ष्या, घुटन इत्यादि बढ़ गए है। वृद्धों के लिए सम्मान और सुरक्षा का भाव कम हो रहा है। आज के युग में यह देखा जा रहा है कि वृद्धों के अधिकार छिन लिए जा रहे है, उन्हें अकेले जीवन जीने को बाध्य किया जा रहा है। उनको वृद्धाश्रमों में भेजने की चेष्टा की जा रही है। बूढ़ों को ऐसा जीवन जीने को बाध्य होना पड़ता है जैसे कि वे अपनों के ही बीच में बेगाने से हो। उनकी आवश्यकता को मिटा दिया जाता है। अपने ही संतानों से अपमानित होकर भी उन्हीं के आश्रय में जीना पड़ता है वह भी आर्थिक मजबूरी के कारण। मैत्रेयी पुष्पा की अनेक ऐसी कहानियाँ है जो वृद्धों को केंद्र में रखकर लिखी गई है। 'अपना अपना आकाश' कहानी में वृद्ध माँ की दयनीय स्थिति का चित्रण मिलता है। कहानी की मुख्य पात्र वृद्ध कैलाशों देवी तीन बेटों की माँ थी और जवानी के दिनों में सारा घर का दायित्व अकेले ही निभाया करती थी। देवर– देवरानी द्वारा सगी माँ से भी अधिक

सम्मान मिलता था। पति की मृत्यु के बाद अपने तीनों बेटों को बड़ी मेहनत से पढ़ा– लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करवाया था। इतना लायक बनाया था कि सब अच्छे पदों पर आसीन हो गए थे। इस मामले में उनकी देवर और देवरानी का भी बड़ा योगदान था। पर बेटे बड़े होते ही शहरी चकाचौंध से प्रभावित होकर अपना दायित्व भूलने लगे थे। वे माँ की इजाजत के बिना ही शहरी लड़की से विवाह रच लेते है और औपचारिकता के चलते माँ को शादी में बुला लिया जाता है। पर माँ और चाचा– चाची देहाती, अनपढ़ और गवार होने के कारण उनकी उपस्थिति उन्हें खलती है। गाँव में जो भी जमींन जायदाद थी उन्हे माँ को बहला– फुसलाकर हस्ताक्षर करवा के अपने नाम कर लेते है। माँ भी ममता के वशीभूत होकर सारा जमीन बेटों में बाँट देती है। इसके बाद चार– चार महीने वे हर एक के घर की मोहताज बन जाती है और इस तरह उनके बिस्तर का भी बँटवारा हो जाता है। एक शहर से दूसरे शहर माँ के विदा की तैयारी बड़े आनंद से करने लगे और अंत तक जब माँ को झेल न सके तो उन्हें दूर के वृद्धाश्रम में भेजने की तैयारी कर डाली। नौकर लल्लू से जब यह बात मालूम पड़ती है तो माँ की मनोदशा का दर्दनाक चित्रण इस प्रकार है....

"सुन्न– सी रह गई वे स्तब्ध.... इतनी अवांछित क्यों पड़ी है यहाँ? क्यों जाती है मँझले के घर? और छोटे के आगरे? क्यों.... क्यों.... क्यों? अंतर की ज्वाला पूरे वेग से शिखरान्वित हो जलने लगी थी, साँसों की धौंकनी उच्छ्वास छोड़ रही थी। छाती में सुलगन से उठे धुए के गुबार घुमड़ने लगे थे.... इतनी पराई कि माँ के लिए वनवास की तैयारी कर दी उनके अपने ही बेटों ने....!"

बेटों के निर्णय ने माँ को झकझोर दिया था इसलिए माँ ने अपने नौकर लल्लू से रात में ही यह निर्णय कर लिया था कि वह अब और बेटों पर बोझ नहीं बनेगी। उन्हें मुक्त कर देगी इसलिए उन्हें बिना बताए ही अगले दिन सवेरे अपने देवर लखिया के पास गाँव चली जाती है। शायद इसी में उनकी मुक्ति थी। मैत्रेयी पुष्पा ने एक वृद्ध माँ की बुढ़ापे की स्थिति का दर्दनाक वर्णन किया है साथ ही इस वृद्ध अवस्था में भी उनके आत्मबल को साबित किया है जो इस उम्र में भी संघर्ष करते, लड़ते हुए कतराती नहीं है।

'छाह' कहानी में भी वृद्ध जीवन की व्यथा का सुंदर वर्णन मिलता है। ददुआ जो वृद्ध है वे अपनी जवानी के दिनों में हमेशा दूसरे लोगों की मदद किया करते थे वही बुढ़ापे में अपने ही बेटों द्वारा सताये जाते है। उनकी हालत असहाय, लाचार एवं हीन व्यक्ति सा हो जाता है। उनके बेटे पैसों के लालची थे और बहुओं ने काभी भी उनकी सेवा न की थी। पर वृद्ध ददुआ काभी हिम्मत नहीं हारते और बेटों और समाज की परवाह किए बिना एक मुसलमान औरत बतासों सककीं की मदद लेते है। उनकी अस्वस्थता में वही बतासों पूरी जिम्मेदारी के साथ उनकी मदद करती है क्योंकि वह अन्य जात की होते हुए भी अहसानफरामोश नहीं थी ददुआ द्वारा किए गए मदद को वह काभी भूली नहीं थी। वह बड़ी आत्मीयता से उनकी देखभाल करती है। लालची बेटे शहर का हवा– पानी लग जाने से काफी लालची हो गए थे वे डरते थे कि उनके पिता जमीन जायदाद में उस बतासों को हिस्सा देंगे इसलिए वे उन पर अत्याचार करते है। पर ददुआ सकारात्मक मूल्यों के पक्षधर थे इसलिए वे अपने ही लोगों से संघर्ष करते है और एक पराई औरत की सेवा का मूल्य भी देते है। उसे अपनी जमीन का हिस्सा दे देते है।

उक्त कहानियों द्वारा यह स्पष्ट है कि आज की नई पीढ़ी के लोगों का मन बहुत ही संकुचित हो गया है। वे अपने सगे रिश्तों को भी स्वार्थ के नजरिए से टटोलते है। बड़ों के प्रति उनमें कोई आदर या सम्मान या श्रद्धा का भाव नहीं है। अपने वृद्ध पिता– माता को दर– दर भटकने को मजबूर कर देते है। आज की नई पीढ़ी इतनी आत्मकेंद्रित हो गई है की बूढ़े अनपढ़ माँ– बाप को अपने साथ रखने में संकोच करते है। उन्हे लगता है कि उनकी जीवन शैली बाधित होगी। पर मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में वृद्ध भी संघर्ष करते हुए नजर आए है। अपने अधिकार अपने हक के लिए इस अवस्था में भी लड़ते हुए बड़े दृढ़ नजर आए है।

जातिगत भेदभाव के कारण संघर्ष

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था किसी न किसी रूप में विद्यमान है। पहले समाज में वर्ण– व्यवस्था थी और समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभाजित था। ये व्यवस्था कर्म के आधार पर थी। बहुत समय के बाद इसमें परिवर्तन आया और जाति व्यवस्था का जन्म हुआ जो कि जन्म के आधार पर होता था। प्रथम तीन वर्णों को समाज में सभी सम्मान, अधिकार, और प्रतिष्ठा प्राप्त थे जबकि चौथे वर्ण को अछूत करार दिया गया। इसे क्षुद्र और छोटा माना जाने लगा। वर्तमान समय में जाति के क्षेत्र में अनेक बदलाव आए है। अब लोगों में समानता की भावना पनपने लगी। कई प्रकार के सामाजिक, धार्मिक आंदोलन हुए और अनेक प्रयत्न के फलस्वरूप अब जातिगत भेदभाव कम होने लगे पर पूरी तरह से खत्म नहीं हुए। किसी न किसी स्तर तक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, छुआछूत की भावनाएं आज भी विद्यमान है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ इन्हीं समस्याओं से जूझती और संघर्ष करती हुई दिखाई गई है। उनकी कहानियों में जातिगत भेदभाव को उठाया गया है जो आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। उनकी 'छाह' कहानी में इस तरह के भेदभाव का सुंदर चित्रण मिलता है। कहानी के वृद्ध पात्र ददुआ को इस भेदभाव के कारण संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। ददुआ की पत्नी की मृत्यु के बाद उनकी बेटी रेशम उनका देखभाल करती थी पर वह भी एक बेटे को जन्म देकर मर जाती है तो ददुआ एकदम अकेले हो जाते है। उनके बेटे और बहुए उनका ध्यान नहीं रखते और उन्हें बुढ़ापे में अकेले ही अपने पोते और खुद की देखभाल करनी पड़ती है ऐसे में गाँव की एक मुसलमान औरत बतासों उनका ख्याल रखने सामने आती है। वह भी अकेली औरत है पर गाँववाले इस रिश्ते को गलत नजरिए से देखते है और उनके बेटे भी इसे नापसंद करते है। यही पर जातिगत भेदभाव दिखता है। गाँव के लोग उन्हे बुरा भला कहते है और एक मुसलमान से संबंध रखने के कारण गाँव के लोग भी उनसे रिश्ता तोड़ देते है। बतासों इस बात को समझती है और पर तब भी उनके पोते वेदू कि खातिर वह सबको नजरअंदाज करती हुई उसके लिए खाना बनाती है। वह कहती है....

'ददुआ तुम मति खाओ, परि जि बच्चा, जि का जाने जाति– पाति? ऊँच– नीच? जाकी आवाज सुनिके ही, ददुआ मैं रोटी ले आई हूँ"।

बतासों भी अपने जात– पात की परवाह किए बिना केवल इंसानियत की खातिर एक वृद्ध और छोटे बच्चे की मदद करने को आगे आती है, उसे समाज, गाँव वाले सभी से संघर्ष करना पड़ता है और वह करती भी है और हर सीमा को लांघकर केवल अपना कर्तव्य करती है। बतासों को जातिगत भेदभाव के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की एक और कहानी 'मन नाहि दस बीस' में जातिगत भेदभाव के फलस्वरूप निम्न जाति की उपेक्षा का भाव दिखाया गया है। कहानी की प्रमुख पात्र है चंदना जो अपने बाल– सखा स्वराज से प्रेम करती है। वह स्वराज के साथ खेलते, पढ़ाई करते हुए बड़ी हुई है पर जब उससे विवाह करने की बात चंदना अपने पिताजी से कहती है तो पिताजी जात– पात के दर से स्वराज को गाँव से दूर पढ़ाई के बहाने भेज देते है और चंदना का ब्याह अनजाने में एक नपुंसक लड़के से कर देते है। वह स्वराज से इसलिए विवाह नहीं कराना चाहते थे क्योंकि वह जाति से चमार था स्वराज के पिता भी इस बात के लिए स्वराज को समझते हुए कहते है–––––

"बड़ी जाति की है सुराज वह। हम हरिजन चमार ठहरे बेटा। अपनी औकात में ही रहे तब ठीक"। इस तरह स्वराज भी अपने पिता की बात मान लेता है और चंदना का विवाह एक अयोग्य लड़के से हो जाता है और उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपने ही देवर और साँस द्वारा प्रताड़ित होती है और अंत तक सहने की सीमा जब खत्म हो जाती है तो वह अपने देवर एयर पति को धतूरे खिलाकर मार डालती है। इस तरह चंदना को भी जातिगत भेदभाव के कारण अपने प्यार से वंचित होना पड़ता है पट अंत तक वह संघर्ष करती हुई सफल होती है।

अनेक बदलाव के पश्चात भी समाज में जातिगत भेदभाव की भावना अब भी बरकरार है। आज भी किसी व्यक्ति का परिचय उसकी जाति से ही होता है। निम्न जाति के विकास में उच्च जाति बाधा बनकर खड़ा रहता है। जाति आज के वर्तमान समय में ऐसी समस्या बन गई है जो समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। इसी भेदभाव के कारण मनुष्य का जीवन बदतर होता जा रहा है। वह पशू की तरह जीने को विवश होता जा रहा है।

विधवा जीवन का संघर्ष

हमारे समाज में विधवा की स्थिति बहुत दयनीय है, उनके साथ सदा से ही अन्याय होता आया है। उनकी स्थिति एक अबला नारी की स्थिति की तरह है जैसे की विधवा वह अपनी मर्जी से हुई है। एक विधवा स्त्री पर समस्याओं का पहाड़ सा टूट पड़ता है और वह अपने साथ हो रहे अन्याय का विरोध करने में विवश, असहाय, लाचार और दुर्बल सी हो जाती है। शिक्षा के कारण शहरों में तो कुछ बदलाव आया है जैसे कि या तो वह पुनर्विवाह कर लेती है या फिर इतनी स्वावलंबी बन जाति है कि खुद के बल– बूते पर पूरा परिवार संभालती है। पर गाँव में स्थिति अब भी वैसी ही है। वहाँ पुनर्विवाह को लज्जा का विषय माना जाता है और वर्षों से चली आ रही परंपरा का विरोध करने का साहस अभी गाँव की स्त्री जुटा नहीं पाई है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भी विधवा जीवन के संघर्ष को दिखाया गया है। 'चिन्हार' कहानी की सरजू अपने पति द्वारा सताई हुई थी पर तब भी अपने पति के लिए ही कामना करने वाली स्त्री थी। वह एक धैर्यशील नारी थी जो अपने पति के अंतिम समय तक परवाह करती रही थी। भारतीय समाज में जब एक स्त्री विधवा हो जाती है तब उसकी स्थिति भी दयनीय हो जाती है। वह उपेक्षित बन जाती है जैसा कि सरजू के साथ होता है। विधवा सरजू जब माँ बनने वाली होती है तो उसकी ननद उसे अपने साथ ले जाती है और अपने स्वार्थ के लिए उसका बच्चा होने तक खूब ख्याल रखती है पर जैसे ही उसका बच्चा हो जाता है उसे एक किनारे कर देती है। सरजू हर तरह से निरुपाय होकर अपने ननद के घर की नौकरानी बनकर रह जाती है। बच्चा होते हुए भी ममता को दबाकर रखना पड़ता है। यह एक विवश, विधवा, बेसहारा औरत की दशा है, उसके स्तन में दूध है पर इतनी विवश कि अपनी बेटी को रोते– बिलखते देखकर भी उसे दूध नहीं पीला सकी....

"कैसी विकट स्थिति.... पास ही क्षुधा से व्याकुल चीखता शिशु और स्तन लिए दुग्ध पान को तरसती माता"।

पर सरजू की बेटी कनक जब बड़ी होती है तो वह अपनी माँ सरजू को पहचान जाती है। अपने विवाह के दिन वह माँ का आशीर्वाद लेने उसके पास पहुँच जाती है। कनक के मुँह से माँ शब्द सुनते ही सरजू जैसे अपना होश खो बैठती है पर आँखों से पत्थर और कठोर हो जाती है, उसके आँखों से आसू नहीं निकलते। सरजू अंदर से इसलिए कठोर हो जाती है क्योंकि उसे उसके बेटी के भविष्य को लेकर चिंता है कि अगर वह उसे पहचान जाएगी तो उसका भविष्य कही जलकर राख न हो जाए। मैत्रेयी पुष्पा इसीलिए सरजू के कठोर रूप को कहानी में दिखाती है क्योंकि उसकी कठोरता में बेटी के उज्ज्वल भविष्य का सपना था, सरजू डरती थी कि उसकी गरीबी उसके बेटी को कही खत्म न कर दे इसीलिए वर्षों बाद बेटी को पाकर भी उसे पहचानने से इनकार कर देती है। यही एक विधवा, अकेली औरत की त्रासदी थी जिसका संघर्ष वह अपने बेटी की खातिर जीवन भर करती है।

'उज़दारी' कहानी में भी विधवा औरत की दयनीय स्थिति और फिर उसके द्वारा किए गए संघर्ष का चित्रण है। विधवा शांति की स्थिति उसके घर में एक नौकरानी की तरह थी। पति की मृत्यु के बाद वह बेसहारा और पराश्रिता बन गई थी। पति के जीवन काल में उसका जीवन खुशियों से भरा था पर उसकी मृत्यु होते ही शांति की सारी खुशी जैसे किसी ने छिन ली। उसकी जेठानी उससे घर का सारा काम करवाती थी, इसके अलावा मशीन से चारा काटना, ढोरों का जिम्मा इत्यादि सब करते हुए भी शांति और उसके बेटे खाने को तरसते थे। उसके साथ इतना सब होते हुए भी वह सब कुछ सह जाती है क्योंकि उसे लगता था कि एक विधवा का जीवन संघर्षों से ही भरा होता है। वह कहती है कि....

"मैं जानती थी सब कुछ। इसमे नया क्या था? हर औरत की आदमी के मरने के बाद यही दशा गाँव में क्या दो– चार विधवाएं नहीं। वे विधवा स्त्री नहीं, फिर धोर पशुओं में मिला दी जाती है–––– मुछिका (मुँह ढकने की जाली) बांधकर बैल की तरह काम करने का साधन....। मैं आदमी थी तब तक, जब तक आदमी का हाथ सिर पर था। जब तक श्यामनरायण की पत्नी थी। अब इसमे गुरेज भी क्या मानना?

जिठानी ने समझा नहीं दिया था पंद्रह दिन बाद ही, "आदमी मरा है, दुख तो है, पर यह बता कि तुम महतारी– बेटा के पेट तो नहीं बाँध ले गया संग? और ऐसे बिठा कौन खिला देगा री जिंदगी– भर"।

इस तरह शांति अपने जीवन में सब कष्टों को सहती है पर जब उसके बेटे सोमू के साथ अन्याय होता है तो वह आक्रोश से भर उठती है और अपने बेटे सोमू की खातिर अपने जेठ से खतरा मोल लेती है। वह जेठ के खिलाफ आवाज उठती है और उससे अलग हो जाती है जेठ से अपना हिस्सा मांगते हुए। उसके पति ने जीवन भर कमाई कर अपने बड़े भाई के हाथों में रखा कभी अपने पत्नी और बेटे की चिंता नहीं कि पर पत्नी जब अपना हिस्सा मांग रही है तो जेठ उसे देने से कतराता है, उस पर गुस्सा करता है। यहाँ तक कि जेठ शांति और उसके बेटे सोमू को मार डालना चाहता है तो शांति अपने जेठ से बचने के लिए गाँव के एक कुम्हार भोलारम के साथ भाग जाती है पर वहाँ भी उसे मर्दों के हवस का शिकार बनना पड़ता है। इस तरह शांति जीवन भर संघर्ष करती है एक विधवा होते हुए भी काभी हार नहीं मानती। मैत्रेयी पुष्पा ने एक ऐसी बेबस विधवा औरत का चित्रण किया है जो काभी हार नहीं मानती। एक पुरुष जब अकेला पद जाता है तो वह स्वतंत्र ढंग से अपना जीवन जी सकता है पर हमारे समाज में एक विधवा औरत पर कई समस्याओं का पहाड़ टूट पड़ता है। और अगर वह कमजोर पड़ती है तो दुनियवालों के हाथों से बच नहीं पाती है।

अनमेल विवाह का संघर्ष

भारतीय समाज में एक जवान लड़की के विवाह को अनिवार्य माना जाता है क्योंकि लड़की के जवान होते ही वह माँ– बाप के चिंता का कारण बन जाती है। और अगर माँ– बाप गरीब हो तो योग्य वर खोजने में भी बड़ी परेशानी होती है और जिसका परिणाम होता है अनमेल विवाह। ऐसे विवाह में सबसे बड़ा जो दोष होता है वह यह कि दोनों की आयु में बड़ा अंतर होता है। बल्कि कही– कही तो दोनों कई स्तरों पर अनमेल होते है। मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार अनमेल तो कई तरह के हो सकते है

जैसे आयु, शिक्षा, योग्यता, रहन– सहन, पेशा या रोजगार में एक दूसरे से बहुत ऊँचाई, निचाई इत्यादि। ऐसे में लड़की पक्ष की कमजोरी को दहेज पूल के रूप में पाटती है। काभी—काभी तो अधेड़ उम्र के लड़के के साथ एक छोटी सी बच्ची का विवाह करा दिया जाता है जिसका परिणाम होता है विधवापन।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'गोमा हँसती है' में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण मिलता है। गोमा देखने में जितनी सुंदर है उतनी ही बुद्धिमती भी पर उसका विवाह एक कुरूप, गँवार और काना लड़के से करा दिया जाता है। गोमा का ससुर पैसे के बाल पर अपने बेटे के लिए एक सुंदर और बुद्धिमती लड़की विवाह करा लाता है। पर गोमा अपनी आठीती से कतराती नहीं बल्कि अपनी मीठी मुस्कान द्वारा अपने पति को अपनी मुट्ठी में रखती है। वह एक सुंदर गृहनी है जो सारे घर का काम भी संभालती है और अपने पति के भोलेपन का फायदा उठाकर गाँव के एक अन्य पुरुष बलिसींग से नाजायज रिश्ता रखती है। उसे अपने जाल में फँसाकर उसकी जमीन भी अपने नाम करवा लेती है। उधर उसके पति किडडे को सब कुछ पता होते हुए भी वह गोमा से कुछ नहीं कहता क्योंकि उसे डर है कि ऐसा करने पर गोमा उसे छोड़ चली जाएगी और उसे दूसरी लड़की नहीं मिलेगी। वह गोमा के सुंदर चेहरे और तिरछी हंसी का लोभी है। एक ओर जहाँ किसी पुरुष के अपने पौरुष को बनाए रखने की जिद वहीं दूसरी ओर गोमा की सुंदरता और आकर्षित होने वाला टन और मन। कहानी में यही स्पष्ट हुआ है कि गोमा जैसी औरते जो जो अपने भाग्य को कोसने के बजाय उसे अपने ही तरह ढाल लेती है।

'रास', कहानी में भी अनमेल विवाह के चित्रण हुए है। वहाँ एक छोटे लड़के से एक बड़ी लड़की का विवाह कराया गया है। जैमन्ती का विवाह अनमेल है। वह ससुराल में गीत गाती है जिसका भाव उसका छोटा सा पति नहीं समझ पाता है पर उसका दुष्ट ससुर रात को उससे हमबिस्तर होने चला आता है जिससे घर के लोग चले आते है। इस तरह से स्त्री के शरीर को केवल भोग करने की वस्तु मानी जाती है और लोग अपनी नैतिकता को भी पार कर जाते है। जो ससुर अपने पिता के उम्र का है वही हमबिस्तर होने आ जाता है और साँस को भी इसमें कोई गलती नहीं दिखती है। जैमन्ती इस घटना के बाद ससुराल से अपने घर चली आती है पर वहाँ भी उसे अपनी माँ से तिरस्कार ही मिलता है। इस तरह जैमन्ती का जीवन नरक स बन जाता है। इस तरह एक अनमेल विवाह के कारण जैमन्ती को अभिशप्त जीवन जीना पड़ता है। इस प्रकार के अनमेल विवाह से वैवाहिक जीवन में तनाव भी बढ़ते है और और कभी– कभी तो रिश्ते टूट भी जाते है जिससे स्थिति बहुत दर्दनाक बन जाती है। इन कहानियों के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि आज भी हमारे समाज में स्त्री खोखली मान्यताओं को झेल रही है। यातनाओं का शिकार हो रही है। कही– कही तो कुछ औरते इन समस्याओं से हिम्मत दिखाकर बाहर निकल आती है, उबर जाती है पर अधिकांश की स्थिति ही करूण और पीड़ादायक और यातनामय बन जाती है। इन सब के लिए सबसे ज्यादा जो आवश्यक है वह यह कि विवाह जैसे संस्था को स्वस्थ नजरिए से देखा जाए। स्त्री के साथ कोई भी पुरुष दुर्व्यवहार न करे। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को प्रतिष्ठित करने की चेष्टा की है। उनकी कहानियों में स्त्रियों के संघर्ष नजर आते है और ये स्त्रियाँ अपने संघर्षों द्वारा काफी हद तक सफल भी हुई है। लेखिका ने समाज में व्याप्त जो सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास, ढकोसले और रूढ़ियाँ है उन्हें त्यागने के साथ– साथ स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को प्रतिष्ठित करते हुए दिखाया है।

संदर्भ सूची

1. पुष्पा, मैत्रेयी, चिन्हार, आर्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली, २०१६
2. पुष्पा, मैत्रेयी, ललमानियाँ तथा अन्य कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली , २०१५
3. पुष्पा, मैत्रेयी, गोमा हँसती है, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१६
4. अग्रवाल, रोहिणी, स्त्री लेखनरू स्वप्न और संकल्प, राजकमल, नई दिल्ली, २०११ ई.
5. अग्रवाल, वासुदेव शरण, पद्मावत, लोकभारती, इलाहाबाद, २००७ ई.
6. अनामिका, स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा, समसामयिक प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, २०१४ ई.
7. कस्तवार, रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, (स्त्रीरू भारतीय सामाजिक संरचना ऐतिहासिक परिदृश्य), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१३ ई.
8. कुमारी, पूनम, मध्यकालीन हिन्दी काव्य का स्त्री–पक्ष, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, २०१५ ई.
9. प्रसाद, जयशंकर, ध्रुवस्वामिनी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण २०११ ई.
10. पुष्पा, मैत्रेयी, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१० ई.
11. सं. सिंह, विजयबहादूर ,मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१६ ई.
12. दीक्षित, दया, मैत्रेयी पुष्पारू तथ्य और सत्य, सामाजिक बुक, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २०१० ई.
13. सिंहल, बैजनाथ, शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९४ई .